सं मो वि./एफ.डी./2/36-84/29130--चूंकि राज्यपाल हरियाणा की राये है कि मैं. विकास फोर्जिंग्स प्रा. लि. प्लाट नं. 173, सैक्टर 24, फरी राबद के श्रमिक श्री सुरेंग चन्द तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इस के बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीधोगिक विवाद है;

भीर चृकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायिन गियह तू निर्दिष्ट करना वां छनीय समझते हैं,

इसलिए, अब, श्रीद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपघारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए श्रिधिसूचना सं 11495-जी - अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 हारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रिधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद को विवादशस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा नामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त शबन्यकों तथा श्रमिक के बीच या शो विवादशस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रयवा संबंधित मामला है।

क्या श्री सुरेश चन्द की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

ां स्रो विश्व हो | 2 | 3 | 36-84 | 29137 - चूकि राज्यपाल हरियाणा की राये है कि मैं. विकास फोर्राजग्स प्रा. लि., प्लाट नं 173, सैक्टर 24, परीदाबाद के श्रमिक श्रो राम नरेश तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इस में इस के बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीद्योमिक विवाद है ;

ग्रीर चूकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इस लिये. अब. सौचोगिक विवाद प्रिवित्यम, 1947 की धारा 10, की उपधारा (1) के खंड (ग) हारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इस के हारा राज्यपाल इस के हारा प्रतान में सरकारी प्रिवित्तका के 5415-3-अम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी अम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 हारा उक्त अधिनियम की आरा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, फरीदाबाद को विवाद प्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संवधित नोचे लिखा मामला न्याय- निर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद एस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अधवा संवधित मामला है।

नया श्री राम नरेश की सेवाओं का समापन न्यायोचित् तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस ऱाहत का हरकदार है ?

पं सो विंग् कं डो /2 | 36-84 | 29144 -- चूंकि राज्येपाल हरियाणा की राये है कि मैं. विकास फोर्जिंग्स प्रा. लि. प्लाट् नं. 173, मैंक्टर 24, फरीदाबादके श्रमिक श्री हीरात्रसाद तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इस में इस के बाद लिखित मामले के संबन्ध में फोई श्रीद्योगिक विवाद है।

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं।

इसलिये अब, श्रीग्रोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की. धारा 10 की उपधारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोगकरते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 5415-3-धम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पहुते हुए अधिसूचना सं 11495-जी.श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदायाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उसे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निविष्ठ करते हैं, जो कि उक्त अवन्धकों तथा श्रमिक के भीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत अथवा संबंधित मामला है।

बया श्री हीरा प्रसाद की सेवाओं का समापन गायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं ओ वि एफ डी /2/36-84/29151.--चूकि राज्यपाल हरियाणा की राये है कि मै. विकास फोर्राज्य प्रा. लि., प्लाट नं 173, सैंक्टर 24, फरीदाबाद के श्रमिक श्री सुदर्शन तथा उसके प्रकल्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेलू निर्विष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, श्रेंच, श्रीद्योगिक विवाद श्रीधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई क का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं. 11495-जी श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सबंधित नीचे लिखा मामला न्यायानिर्णय के लिये कि करते हैं, जोकि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है

क्या श्री सुदर्शन की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो. वि /एफ. डी/2/36-84/29158; चूंकि राज्यपाल हरियाणा की राये है कि मैं विकास फोर्राजग्स प्रा. लि., प्लाट नं. 173, सैक्टर-24, फरीदाबाद के श्रमिक श्री मोतीलाल तथा। उसके प्रवन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रोद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10की उप धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं-5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी. अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायलय, फरीदाबद को विवाद ग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद ग्रस्त भामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है :--

क्या श्री मोतीलाल की सेवाशों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है?

सं .ग्रो. वि /एफ डी /2/36-84/29165 —चूंकि राज्यपाल हरियाणा की राये है कि मैं विकास फोर्राज्यस प्रा. लि., प्लाट नं. 173, सैक्टर-24, फरीदाबद के श्रीमिक श्री राम नारायण झा तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबद की विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्त्रकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा संबंधित मामला है:-

क्या श्री राम नारायण झा की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ग्री. वि./एफ. डी./2/36-84/29172 - चूंकि राज्यपाल हरियाणा की राये है कि, मैं. विकास फोर्राजिंग्स प्रा. लि., प्लाट नं. 173, सैक्टर 24, फरीदाबाद के श्रीमक श्री भारदा सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के संबंध में कोई मौद्योगिक विवाद है।

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यप ल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं,

इसलिए, ग्रव, ग्रीद्योगिक विवाद, ग्रीधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई. शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हिर्याणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते. हुए ग्रिधिसूचना सं. 11495-जी श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्राधीन गठित श्रम न्यायाल्य फरीदावाद, को विवादग्रस्त या ससे सुमंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है:-

क्या श्री शारदा सिंह की सेवाझों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हर्कदार है ?